IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाल–विकास में परिवार की भूमिका एक अध्ययन

रेणु रानी

एम॰ ए॰, पीएच॰ डी॰

गृह विज्ञान

बी॰ आर॰ ए॰ बिहार विश्वविद्यालय,मुजफ्रपफरपुर

सारांश

परिवार के बिना हम नितान्त परावलम्बी मानव के पालन पोषण की कल्पना भी नहीं कर सकते। शिशु मानव परिवार की छत्र–छाया में परिवार के सदस्यों के स्नेह और प्रेम से पुष्ट होता है, उसका नैसर्गिक विकास होता है, वह बालक से बलवान पल्लवित, पुष्पित होता है और हरे–भरे वृक्ष के रूप में सर्वांगीण विकास को प्राप्त होता है। परिवार प्राचीनतम, स्थायी, प्राकृतिक अनिवार्य एवं रक्त सम्बन्धों पर आधारित अत्यन्त उपयोगी संस्था है जिसके अभाव में मानव जाति का अस्तित्व ही खतरे में पड़ सकता है। वृक्ष की भांति सेवा और बलिदान का आदर्श बालक यहीं से ग्रहण करता है।

कूट शब्द: सदस्य, रक्त, *पल्लवित,* विकास, *आर्थिक*

भूमिका

पारिवारिक वातावरण पर ही घर का वातावरण बालक–बालिकाओं के विकास में किसी अन्य सामाजिक कारक से अधिक प्रभाव डालता है। बालक के विचार नैतिक निर्णय, उसकी महत्वाकांक्षाएं, व्यक्तिगत मूल्य आदि मूल रूप से पारिवारिक वातावरण पर ही निर्भर करते हैं। माता–पिता का एक दूसरे के प्रति नैतिक व बालकों के प्रति नैतिक व्यवहार, बालकों के सांवेगिक विकास में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है। मैक्वैक्स बेबर के अनुसार ''जन्म से लेकर अठ्ठारह वर्ष तक बालक अपना अधिकतर समय परिवार और समुदाय में व्यतीत करता है। विभिन्न परिवारों के सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व शैक्षिक वातावरण में भिन्नता पायी जाती है। परिवार का अच्छा वातावरण बालक को समायोजन एवं उत्तम गुणों के विकास में सहायक होता है। अच्छे संस्कारी परिवार द्वारा ही बालक में नैतिकता व व्यक्तिगत मूल्यों का विकास होता है।'' यदि आप चाहते हैं कि बालक सुन्दर वस्तुओं की प्रशंसा और निर्माण करे तो उसके चारों ओर सुन्दर

वस्तुएं प्रस्तुत कीजिए। प्लेटेटो का कथन है कि ''घर, परिवार का महत्व तो प्रत्येक प्राणी के लिए है परन्तु मनुष्य के लिए घर का महत्व अन्य प्राणियों की अपेक्षा अधिक है क्योंकि परिवार में रहकर वह न केवल अपना सर्वांगीण विकास करता है वरन् अपने परिवार की सांस्कृतिक परम्पराओं को अपनाकर उनकी समृद्धि भी करता है। प्रायः देखा गया है कि जो बालक अपने माता–पिता से बिछुड़ कर अपने घर में नहीं पलते हैं उनके व्यक्तित्व में कुछ दोष उत्पन्न हो जाते हैं और उनका व्यक्तित्व विकास अवरूद्ध हो जाता है।''

समस्त मानवीय समूहों में परिवार सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्राथमिक समूह है। परिवार एक छोटा सा समूह है जिसमें सामान्यतः माता–पिता तथा एक या अधिक बच्चे होते हैं। यह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को विविध प्रकार से प्रभावित करता है। छात्रों का समायोजन कैसा है? छात्रों का परिवार के प्रति व्यवहार कैसा है? उसको अपने घर में किस प्रकार की सुविधा प्राप्त है? परिवार की सामाजिक स्थिति क्या है? आदि सभी बातें परिवार पर निर्भर करती हैं। ''बच्चा सर्वप्रथम अपने परिवार में जन्म लेता है, उसके ऊपर सबसे पहले स्वयं के परिवार का प्रभाव पड़ता है, उसे समाज का कोई ज्ञान नहीं होता है वह अपने बचपन के साथियों को छोड़ देता है, स्कूल बदल जाता है और स्कूल के साथियों को भूल जाता है, परन्तु माता–पिता उसके प्रारम्भिक जीवन के अधिकांष समय तक घनिष्ठ सम्पर्क बनाये रखते हैं। इस प्रकार बच्चे का सम्बन्ध हर पल अपने परिवार से बना रहता है, और परिवार ही एक ऐसा समूह है जो बच्चे के जीवन में सदैव विद्यमान रहता है। परिवार अन्य किसी समूह की अपेक्षा बच्चों की आदतों, अभिवृत्तियों एवं उसके सामाजिक अनुभवों पर निरन्तर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। यह व्यक्तित्व के निर्माण में प्रमुख भूमिका अदा करता है।''

अतः समाज और संस्कृति बालक में संचारित करने के लिए भी परिवार महत्वपूर्ण होता है। परिवार समाज की एक मौलिक सार्वभौमिक संस्था है, जिसके द्वारा मानव के विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ती होती है यह किसी न किसी रूप में प्रत्येक समाज में पाया जाता हैं, अन्य प्राणियों के समान मनुष्य में भी जाति सृजन तथा वंश संरक्षण की नैसर्गिक प्रेरणा होती हैं, इन प्रेरणाओं से ही परिवार का जन्म हुआ परिवार पति–पत्नी तथा उसकी सन्तान से मिलकर बनता है। सामाजीकरण संस्कृति के हस्तांतरण तथा सामाजिक नियंत्रण में भी परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। परिवार प्राचीन समय से ही अनेक महत्वपूर्ण कार्यों को करता रहा है। समाज की एक इकाई के रूप में परिवार आज परिवर्तन के कगार पर है, आधुनिक युग में आर्थिक, राजनैतिक, मनोरंजनात्मक मनोवैज्ञानिक तथा धार्मिक कारण व्यक्ति की अभिवृत्तियों, मूल्यों और व्यवहार को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान है, इसका प्रभाव परिवार पर भी पड़ रहा है, यही कारण है कि आज परिवर्तन परिवार में देखने को मिल रहा है।

संदर्भ सूची

1. प्रधान, डॉ. साधना मूल्य – ''रामचरितमानस में सामाजिक जीवन मूल्य''
2. Remmar's Ryden, Morgan. "Introduction to Education Psychology" Harper & Brothers New Yark, 1954.
3. मित्तल, एम. एन. ''शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार'', इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाऊस, मेरठ, 2005
4. समाजशास्त्र के सिद्धान्त, विद्याभूषण, डी. आर. सचदेव, किताब महल नई दिल्ली ''समाजीकरण में परिवार का महत्व''
5. विद्या मेघ दिसम्बर, विद्या प्रकाषन मंदिर लि. मेरठ, ''किशोरावस्था में पारिवारिक सम्बन्धों की भूमिका'', 2007